शुभम संदेश
epaper.lagatar.in
06 Jul 2024 - Page 7

राजधानी में दो दिवसीय खड़िया भाषा साहित्य सम्मेलन प्रारंभ

भाषा चाहे कोई भी हो, कभी नहीं मरती : माधव कौशिक

संवाददाता। रांची

साहित्य अकादमी नई दिल्ली, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन और जनजातीय शोध संस्थान रांची के तत्वावधान में दो दिवसीय रांची में खड़िया भाषा साहित्य सम्मेलन प्रारंभ हुआ. मोरहाबादी में रामदयाल मुंडा जनजातीय शोध संस्थान में आयोजित उक्त सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासन, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन की सचिव वंदना टेटे, खड़िया लेखिका इग्नासिया कुल्लू, छत्रपति शिवाजी महाराज विवि के कुलपति केसरी लाल वर्मा, साहित्य अकादमी सामान्य परिषद के सदस्य महादेव टोप्पो शामिल हुए. पहले दिन खड़िया लिपि, खड़िया भाषा की विशेषता, व्याकरण तथा साहित्य पर चर्चा की गयी. अतिथियों का स्वागत परंपरागत तरीके से हाथ धुला कर तथा खड़िया गमछा भेंट कर किया गया.

इस अवसर पर साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने युवाओं को मातृभाषा में बोलने और साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी की प्रतिबद्धता जाहिर की और भाषा, साहित्य के संरक्षण संवर्धन पर जोर दिया. प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन की सचिव वन्दना टेटे ने खड़िया समुदाय, भाषा और साहित्य पर चर्चा करते हुए कहा कि लिपि और व्याकरण, मानकीकरण से ज्यादा जरूरी है. साहित्य लेखन में दुध खड़िया, सबर और डेलकी खड़िया को भी साथ लेना पड़ेगा. तभी सही रूप में खड़िया साहित्य और समाज आगे बढ़ेगा. साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि भाषा चाहे कोई भी हो, कभी नहीं मरती है. चाहे कोई कुछ भी कहे, भाषा बोलिए और भाषा बचाइए. व्याकरण से ज्यादा साहित्य जरूरी है. आदिवासी भाषाएं टाइम कैप्सूल हैं.

केशरी लाल वर्मा ने पारंपरिक ज्ञान को अस्मिता से जोड़ते हुए कहा कि मातृ भाषाएं आत्म गौरव और आत्मसम्मान का विषय है. अपनी मूल भाषा को नजर अंदाज न करें और अपने घर समाज में अपनी भाषा में बात करें.

डॉ. इग्नेशिया कुल्लू ने कहा कि भाषा और उसका साहित्य किसी एक जाति या समुदाय विशेष की उपलब्धि नहीं होती, बल्कि समस्त इंसानी सभ्यता के लिए गर्व का विषय है. साहित्यकार महादेव टोप्पो ने कहा कि खड़िया साहित्य लेखन के क्षेत्र में अधिक से अधिक रचनाओं को सामने लाने की जरूरत है. उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. प्रीति रंजना डुंगडुंग ने किया. मंगलावती इंदवार और टीम ने पुरखा स्मरण किया. धन्यवाद ज्ञापन टीआरआई के सहायक निदेशक राकेश रंजन डरांव ने किया.

साहित्य सम्मेलन में मौजूद लोगों को संबोधित करते साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक.

खास बातें

- खड़िया भाषा की विशेषता व्याकरण पर की गयी चर्चा
- लिपि और व्याकरण मानकीकरण से ज्यादा जरूरी

तीन सत्र में हुए कार्यक्रम

दिन भर चले तीन सत्रों में भाषा, साहित्य और संस्कृति पर बंधु भगत, वासिल किड़ो और वंदना टेटे की अध्यक्षता में सुगाता टेटे, ओलिव डुंगडुंग, वंदना सोरेंग, शान्ति कुमारी अनित वी., कुल्लू, मेरी एस सोरेंग, समीर बिलुंग, रजनी किड़ो ने आलेख प्रस्तुत किया. मौके पर किरण कुल्लू, मीराकस टेटे, इंदु रानी किड़ो समेत सैकड़ों जनजातीय भाषाओं के विद्यार्थियों और शोधार्थी शामिल थे.